पाठ-बोध

मौखिक

क. लेखक के घर में मासूम चिड़ियाँ दीवार या स्नानघर के कोनों में घोंसले बना लेती थीं तब शारकें उनको विखेर देती थीं लेकिन चिड़ियाँ मोर्चे पर डटी रहती थीं इसलिए लेखक के घर के पीछे हलचल मची रहती थी।

ख. लेखक की पत्नी ने घोंसले के नीचे धरती पर एक अंडा टूटा पड़ा देखा था। उसे लगा यह शारकों का ही काम है इसलिए वह उनसे नाराज़ थी।

ग. लेखक ने पत्नी को बाज़ू पकड़कर इसलिए रोका क्योंकि वह चिड़ियों को शारकों से बचाने जा रही थी जबकि लेखक चाहता था कि चिड़ियाँ अपनी लड़ाई स्वयं लड़ें।

घ. चिड़ियों और शारकों के माध्यम से लेखक यह संदेश देना चाहते हैं कि विपक्षी चाहे कितना भी ताकतवर क्यों न हो, उसमें तब तक ही हिम्मत होती है जब तक सामनेवाला मुकाबला नहीं करता। मुकाबला कमज़ोर आदमी को भी शक्तिशाली बना देता है।

लिखित

क. लेखक के शोधपत्र का सार यह था कि वैदिक काल के आर्य लोगों से लेकर आज तक सप्तसिंधु अथवा पंजाब के लोगों को विदेशी हमलावरों और प्रकृति की निर्दयी शक्तियों से युद्ध करना पड़ा है। तब जाकर वे अपने-आपको इस धरती पर स्थापित कर सके हैं।...अब तो इस धरती पर वातावरण में ऐसे शौर्यपूर्ण भाव व्याप्त हैं जो हर किसी को ज़ुल्म के विरुद्ध खड़े होने के लिए प्रेरित करते हैं।

ख. शारकें ताकतवर थीं और चिड़ियाँ कमज़ोर। लेकिन चिड़ियाँ बिना डरे मुकाबले में डटी हुई थीं। चिड़िया और चिड़ा अपने बच्चे की रक्षा के लिए घोंसले के आगे बैठे थे। शारकों ने दो या तीन के झुंड में हमला किया तो घोंसले में बैठा बच्चा डर के मारे चीं-चीं करने लगा। उस समय चिड़ियों ने जितने गुस्से से उस हमले का जवाब दिया वैसा शायद इनसान भी नहीं कर सकते।

ग. लेखक की पत्नी का चिड़ियों के लिए दाने, रोटी के टुकड़े आदि डालना, उन्हें शारकों से बचाने के लिए व्याकुल होना—यह जताते हैं कि वह पक्षियों से प्रेम करती थी।

घ. कहानी के अंत में चिड़िया का बच्चा जब घोंसले से बाहर निकलकर आया तो सभी चिड़ियाँ उसे उड़ना सिखाने लगीं। चिड़िया के बच्चे का शरीर अब ताकतवर था और उसके पर उड़ने के लिए तैयार थे। उसने पूरा ज़ोर लगाया और ज़ोरदार चीं-चीं की आवाज़ के साथ दीवार के ऊपर से बिजली के तारों को पार करता हुआ खुले आकाश में उड़ गया।

ङ: लेखक व्यावहारिक हैं। वे जीवन की कटु सच्चाइयों को जानते हैं। वे जानते हैं कि जब तक हम स्वयं प्रयास नहीं करेंगे तब तक विजेता नहीं बन सकते। इसके विपरीत लेखक की पत्नी संवेदनशील हैं। दूसरों की सहायता करने को सदैव तत्पर रहती हैं। वे पक्षियों से भी बहुत प्रेम करती हैं। इसलिए हर समय उन्हें शारकों से बचाने को तैयार रहती हैं।

आशय स्पष्टीकरण —

i. जो व्यक्ति निर्दयी होता है। दूसरों पर अत्याचार करता है उसमें तभी तक हिम्मत होती है जब तक कि सामनेवाला पलटकर उसका मुकाबला न करे। उसमें मन की शक्ति नहीं होती।

ii. जब व्यक्ति अत्याचार का सामना करता है तो उसमें प्राकृतिक रूप से हिम्मत आ जाती है जो उसे शक्तिशाली बना देती है।

कहानी के आधार पर हाँ/नहीं में उत्तर दीजिए—

i. शारकी ने लेखक के घर में घोंसला बना लिया था। "नहीं"

ii. घोंसले से अंडा गिर पड़ा था। "हाँ"

iii. चिड़ा-चिड़िया शारकों से मुकाबला कर रहे थे। "हाँ"

iv. बिल्ली चिड़िया के बच्चों को खा गई थी। "नहीं"

v. चिड़िया का बच्चा उड़ना सीख गया था। "हाँ"

● सही विकल्प चुनकर ✓ लगाइए—

क. लेखक की पत्नी घर के पीछे क्या फेंकती थी? ✓ चिड़ियों के लिए दाने और रोटी के टुकड़े

ख. शारकों का रंग-रूप कैसा था? ✓ साँवला रंग, पीली-नुकीली चोंच

ग. चिड़ियाँ कैसे लोगों का प्रतिनिधित्व करती हैं? ✓ मुसीबतों से मुकाबला करनेवाले लोगों का